पंचम अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध-काम के संदर्भ में''

पंचम अध्याय

“विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध - काम के संदर्भ में”

प्रस्तावना -

स्त्री-पुरूष संबंध का चित्रण मोहन राकेश का सबसे प्रिय विषय है । इसे हम उनके लेखन का केंद्रीय आधार कह सकते हैं । क्योंकि उनके सभी उपन्यासों में जो चित्रण हुआ है वह है तनाव ग्रस्त तथा खोखले दांपत्य जीवन से ऊबे पति-पत्नी का, किसी-न-किसी कारण अपने स्वार्थ के लिए बनाए रिश्तों का और समाज में पनपते स्त्री-पुरूष के काम संबंधों का । उनके उपन्यासों में जो चित्रण हुआ है वह स्त्री-पुरूष के इर्द-गिर्द ही सीमित है । उनके प्रत्येक उपन्यासों में चित्रित सभी दम्पति किसी-न-किसी कारण एक-दूसरे से ऊब चुके है और वे अपने आपको एक-दूसरे से मुक्त करना चाहते हैं । अपने आपको एक-दूसरे से अलग रखने के लिए तरस रहें हैं । कुछ पति-पत्नी अपने दांपत्य जीवन में शारीरिक संबंध में संतुष्ट नहीं हैं । इसी कारण वे अपनी कामवासना तृप्त करने के लिए किसी दूसरे स्त्री तथा पुरूष के साथ अपना रिश्ता जोड़कर अपनी काम वासना तृप्त करने का प्रयास करते हैं । ऐसे काम संबंध समाज में अनेक बार स्थापित होते दिखाई देते हैं । जिसको राकेश जी ने सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया है । उनके उपन्यासों मे इस तरह से स्थापित काम संबंधों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है । उनके उपन्यासों में स्थित स्त्री-पुरूष संबंधों का काम के संदर्भ में जो चित्रण परिलक्षित होता है वह इस प्रकार -

5.1 अंधेरे बंद कमरे -

5.1.1 मधुसूदन और सुषमा का काम संबंध -

मधुसूदन अंधेरे बंद कमरे उपन्यास का एक विशिष्ट पात्र है । वह इस उपन्यास का नैरेटर है । वह एक प्रतिष्ठित पत्रकार, सच्चामित्र, एक निष्फल प्रेमी तथा आस्थावान व्यक्ति है । एक सफल पत्रकार होने के कारण ही उसे ‘न्यू हैरल्ड’ समाचार पत्र में राजनीति से सांस्कृतिक पत्रकारिता की जिम्मेदारी सौंपी जाती है । वह आकर्षक व्यक्तित्वपर मोहित होनेवाला व्यक्ति होने के कारण पहले पहल वह नीलिमा की बहन शुक्ला के

आकर्षक, मोहक व्यक्तित्व पर आकर्षित हो चुका है । वह उसे पाने के लिए तरसता भी है परंतु उसे सफलता नहीं मिलती । वह शुक्ला को नहीं भूल पाता । उसे प्राप्त न कर सकने का दुःख तथा निराशा उसे हमेशा घेर लेती थी । परंतु जीवन में कोई भी हताश आदमी एक के बाद दूसरी तरफ मुड़ता है, उसी तरह वह भी अब सुषमा श्रीवास्तव के आकर्षक व्यक्तित्व पर आकर्षित हो जाता है । उसके व्यक्तित्व से वह प्रभावित हो चुका है ।

सुषमा एक आधुनिक नारी है । सुषमा के व्यक्तित्व के बारे में डॉ. गिरीधर प्रसाद शर्मा लिखते है "सुषमा श्रीवास्तव उन आधुनिक नारियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो यौवन के उठानपर पुरूषों के समकक्ष रहकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है किंतु बाद में प्रेम के प्रपंची रूप से पराजित होकर परम्परागत पारिवारिक जीवन की ओर लौटना चाहती है ।"[1] वह पेशे से पत्रकार है । उसे जीवन का काफी अनुभव है । उसने सारा संसार देखा है । वह भी अपने अकेलेपन से त्रस्त है । अपने इस "अकेलेपन की यंत्रणा की छटपटाहट से बचने के लिए किसी से जीवन में जुड़ना चाहती है ।"[2] वह होशियार होने के नाते व्यवहार में उन्मुक्त है । वह अपने लिए चुने हुए मूल्यों को लेकर जीती है । उसे किसी भी प्रकार के मूल्य या धार्मिक बंधनों का डर नही है । उसका अपना चुनाव ही सब कुछ है । वह कोई भी व्यवहार खुलेआम करती है । सुषमा के इस खुलेआम व्यक्तित्व के बारे में इंद्रनाथ मदान लिखते है -"आधुनिकता की स्वीकृति सुषमा में उपलब्ध है, इसलिए शायद इसका व्यक्तित्व सजीव रूप से उभरा है । वह आधुनिकता की चुनौती को स्वीकारती है ।"[3] उसके जीवन में कई लोग आये-गये और इसकी चर्चा भी हुई किंतु वह अपने आपको किसी भी पुरूष की ओर आकर्षित होने में किसी भी प्रकार का भय महसूस नहीं करती । सुषमा के व्यक्तित्व को देख लोग कहते है कि - "सुषमा लोगों के घर तोड़ती है, वह 'होम-ब्रेकर' है ।"[4] परंतु मधुसूदन को सुषमा के प्रति लोगों का दृष्टिकोण है वह गलत लगता है । वह जानता था कि "वह घर तोड़ना नहीं, घर बनाना चाहती है । अपने लिए घर बनाने और उसमें रहने की उसे कितनी चाह है, यह बात उसके शब्दों से ही नहीं, सारे हाव भाव से प्रकट होती थी ।"[5] आगे वह यह भी कहता है कि "उसने अपने आकर्षण के प्रभाव को कई लोगों पर आजमाने का प्रयत्न किया था । यह उसके लिए एक खेल की तरह था । उसने मुझसे कहा था कि इस खेल को खतरनाक हद तक उसने कभी नहीं जाने दिया । लोग उसे जो भी कहे, उसने आज तक किसी का घरेलू जीवन नष्ट नहीं किया ।"[6] इससे ज्ञात होता है कि मधुसूदन सुषमा की ओर कितना आकर्षित हो चुका है । सुषमा भी मधुसूदन की ओर आकर्षित हो चुकी है ।

मधुसूदन एक अविवाहित युवक है । वह अपनी अतृप्त कामवासना तृप्त करने के लिए तथा अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए सुषमा श्रीवास्तव की ओर आकर्षित हो चुका है । वंह इतना आकर्षित हो चुका है कि उसे समाज का डर नहीं लगता । वह उसके साथ शादी करना चाहता है । सुषमा और मधुसूदन की निकटता इतनी बढ गई है कि ''दोनों जीरो बल्ब की रोशनी में भी आँखों से ओझल हो जाते हैं । वे दोनों एक अंधेरे गुंबज में एक दूसरे के स्पर्श में खोये रहने के लिए विवश हो जाते हैं । परंतु दोनों एक-दूसरे में खो नहीं सके । तुरन्त अलग हो गए ।

सुषमा का अपना व्यक्तित्व आकर्षक होने के कारण वह पुरूषों को अपनी ओर आकर्षित करती है लेकिन मधुसूदन के प्रति उसका जो आकर्षण था वह अन्य पुरूषों के समान नहीं था । वह मधुसूदन के साथ अपना एक घर बसाना चाहती थी । परंतु दोनों शादी कर अपना घर बसाने में असमर्थ होने के कारण उनकी घर बसाने की तमन्ना सिर्फ एक सपना ही बन गया । इससे ज्ञात होता है कि सुषमा अब किसी न किसी प्रकार मधुसूदन से अपने संबंध स्थापित करने के लिए तड़फ रही है । परंतु दोनों का यह संबंध बीच में समाप्त हो जाता है।

राकेश जी ने सुषमा के माध्यम से यह दिखाया है कि आधुनिक शिक्षित नारी अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने का प्रयास तो करती है, परंतु वह अपने आपको संभल नहीं पाती । आखिर वह पुरूष का सहारा लेना ही उचित मानती है ।

5.2 अन्तराल -

5.2.1 श्यामा और कुमार का काम संबंध -

कुछ संबंध ऐसे भी होते हैं जिन्हें कोई नाम नहीं दिया जा सकता । परंतु ये नामहीन संबंध कई बार अन्य संबंधों की अपेक्षा सूक्ष्म और गहरे होते हैं । ऐसे ही नामहीन संबंधों का चित्रण राकेश जी ने 'अन्तराल' उपन्यास में किया हैं । यह नामहीन संबंध अपनी कामवासना तृप्त करने तथा एक-दूसरे को सहारा देने के लिए ही स्थापित हो जाता है । प्रो. कुमार और श्यामा का रिश्ता भी काम से भरा हुआ है । श्यामा इस उपन्यास की एक

व्यक्तित्व संपन्न नारी है । वह मंडी के एक विद्यालय में हेड मिस्ट्रेस है । श्यामा इस उपन्यास की नायिका हैं और उसका प्रेमी कुमार इस उपन्यास का नायक है । दोनों के कुछ समानसूत्र हैं इनमें एक है दोनों का अकेलापन ।

श्यामा ने भी कभी प्रेम करने की कोशिश की थी । सबसे पहले वह राजनीतिक कार्यकर्ता सुराजीव से अपना संबंध स्थापित करना चाहती है । परंतु राजीव एक संसद सदस्य की बहन से शादी करता है । तब श्यामा को बहुत दु:ख होता है । इसी दु:ख को भूलाने के लिए वह देव से शादी करती है । शादी के बाद अपने पति से उदारता और कोमलता की चाह रखना स्वाभाविक है । परंतु उसे पति देव की ओर से निरपेक्ष तटस्थता और क्रूर देह व्यापार के सिवा कुछ नहीं मिला । इसी देह व्यापार के प्रति उसके मन में एक ग्रंथि बन चुकी थी जिससे वह अपने आपको जीवन में कभी भी मुक्त न कर सकी । विवाह के डेढ साल बाद ही उसके पति देव की मृत्यु हो गई । पति की मृत्यु के बाद वह अपने आपको अकेली महसूस करने लगती है । इसी अकेलेपन को भरने के लिए वह कुमार के साथ संबंध स्थापित कर अपने अन्तराल को भरने का प्रयास करती है ।

कुमार भी एक प्रोफेसर है । वह लता नामक एक लड़की से प्यार करता था । लता भी कुमार से प्यार करती थी । दोनों शादी करना चाहते थे । परंतु लता की माँ इसका विरोध करती हैं । जब वह कुमार के पास अंतिम बार मिलने आती है तब उससे अलिंगन बद्ध होकर उसे बताती है कि अपनी शादी के लिए माँ राजी नहीं है । परंतु लता अपने आपको कुमार के हवाले छोड़ देती थी । तब वह यह कहकर पीछे हट जाती है कि "अभी नहीं" ।[7] परंतु वह अपने प्रेमी कुमार को धोखा नहीं देना चाहती वह कुमार से कहती है कि "यह भी तो हो सकता है कि बिना ब्याह के तुम मुझे .... ।"[8] परंतु कुमार से शादी करने का भाग्य न होने के कारण वह किसी अन्य से शादी करती है । इसी कारण कुमार दु:खी हो जाता है । परंतु उसे दबाए रखते हुए श्यामा को यह बताता है कि उसने लता को केंद्र में रखकर कैसे जीवन की कल्पना का ताना-बाना बुना था । वह आगे यह भी कहता है कि "शारीरिक आकर्षण से हटकर एक और आकर्षण होता है, व्यक्तित्व का चुंबक आकर्षण, जो शारीरिक आकर्षण से कहीं अधिक मन को खींचता है, उस आकर्षण का अनुभव मुझे पहली बार उसी को लेकर हुआ था ।"[9]

लता तो कुमार को छोड़ चली जाती है परंतु कुमार अपने गम को भूल नहीं सकता । अपने गम को भुलाने के लिए वह शादी करता है । परंतु उसे पत्नी द्वारा प्यार नहीं मिलता । उसे प्यार के तथा सुख के बदले

दु:ख ही ज्यादा मिलता है । उसकी पत्नी उसका साथ न देकर बीच में ही उसे अकेला छोडकर हमेशा-हमेशा के लिए चली जाती है । लता और अपनी पत्नी को भूलकर अपने अभाव को भरने के लिए कुमार अब श्यामा का सहारा लेना चाहता है । लेकिन श्यामा कुमार से जुड़कर जिस संबंध को नाम देना चाहती थी वह इतना सूक्ष्म ओर गहरा था कि उसे प्रयास करके भी नाम नहीं दे पाती थी । कुमार और श्यामा अपने अकेलेपन को भरने का प्रयास तो करते हैं परंतु उसमें भी उन्हें सफलता नहीं मिलती ।

कुमार और श्यामा एक-दुसरे के इतने पास आते हैं कि उन्हें अब समाज का डर नहीं लगता । वे दोनों साथ-साथ घूमने भी निकल पड़ते हैं । उन दोनों का साथ-साथ घूमने का प्रसंग दिखाकर राकेश जी ने उनके सूक्ष्म संबंधों की ओर संकेत किया है । राकेश ने यह प्रसंग रखा है कि श्यामा और कुमार जब घूमने निकलते है तब बारिश आ जाती है । दोनों थोड़ी देर कहीं रूकते है और इसी वक्त दोनों में बातचीत होती है । तब कुमार श्यामा के बहुत निकट जाना चाहता है, तब ''वह श्यामा का हाथ अपने हाथ मे लेकर चल रहा था । वह हाथ अब भी एक चिकने लोंदें की तरह था । अपने हाथ के साँचे में वह जिस तरह उसे ढालता था उसी तरह वह ढल जाता था । फिर भी कोई चीज उसके अन्दर काँपती महसूस होती थी । एक धड़कन सी भी थी कहीं । शायद उँगलियों के पोरों तक आती नसों में । लेकिन श्यामा उसकी तरफ देख नहीं रही थी । वह अपने हाथ से अलग होकर किसी और ही जमीन पर चल रहीं थी ।'' [10] इससे ज्ञात होता है श्यामा कुमार के साथ जुड़ना तथा संबंध स्थापित करना तो चाहती है परंतु पति देव की स्मृति उसे हैरान करती है । दोनों 'टी - हाऊस' में एक - दूसरे से मिलते रहते हैं । वहाँ बातें करते हैं । दोनों एक-दूसरे से स्थायी संबंध स्थापित करना चाहते हैं । परंतु दोनों का यह काम संबंध सिर्फ अपने अकेलेपन की पूर्ति के लिए ही स्थापित हो चुका है । दोनों एक-दूसरे के प्रति समर्पित होना चाहते हैं लेकिन समर्पित नहीं हो सकते ।

श्यामा अपने अकेलेपन की रिक्तता को भरने के लिए ही कुमार के साथ संबंध स्थापित करना चाहती है । इसलिए वह कुमार से कहती है - ''किसी से बात कर सकना भी अपने में एक संबंध है, इसे नाम चाहे जो दिया जाए । और कई संबंधों से यह कहीं गहरा संबंध है, कम से कम मेरे लिए । लेकिन यह संबंध स्त्री और पुरूष के निर्माण भेद का संबंध नहीं है । ''[11] इससे मालूम हो जाता है कि श्यामा पुरूष के जिस मानसिक आत्मीक स्तर पर मिलना चाहती है, वह उसे सुलभ नही हो पाता । उसके जीवन की त्रासदी यही है कि यह त्रासदी अन्त तक

बनी रहती है । श्यामा अब थक चुकी है । वह कुमार के साथ रहने के लिए तड़फ रही है । उसे कुमार के सहवास की जरूरत महसूस होती है । जब वह मंडी में रहने के लिए चली जाती है । तब उसका मन बेचैनी से भर जाता है । वह अपने आपको संभल न पाने के कारण कुमार पर सब कुछ न्योछावर करने का संकल्प करती है । इसलिए तो वह कुमार को मंडी आने का निमंत्रण देती है । परंतु नियति कुमार को वहाँ नहीं पहुँचाती । जब बाद में दोनों की मुलाकात होती है तब श्यामा अपने आपको कुमार के प्रति समर्पित करने की बात बताते हुए कहती है "मैंने तुम्हें बताया था मैंने उन दिनों तुम्हें पत्र लिखा था अपने यहाँ आने के लिए । तब मेरे मन में कोई रूकावट नहीं थी । उस दिन तुम आए होते, तो सम्भव था कुछ भी हो जाता । मैंने अपने को बचाने का कुछ भी प्रयत्न न किया होता । वैसे यह बात भी गलत है शायद । कहना चाहिए कि मैंने तुम्हें बुलाया ही इसीलिए था कि मैं तुम्हारे साथ इस स्थिति को मन में स्वीकार कर चुकी थी । जो संस्कार मन को रोकता था, वह तब तक टूट चुका था ।"[12] इससे ज्ञात होता है कि श्यामा कुमार के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित करना चाहती है । श्यामा आगे यह भी कहती है कि "मैं तुम्हारे और अपने संबंध को बिना नाम दिए उसमें से सब कुछ पा लेना चाहती थी ।"[13] श्यामा अब अपने आपपर काबू न पा सकने के कारण कुमार के साथ रहना चाहती है । उससे अनाम संबंध प्रस्थापित कर वह सबकुछ पा लेना चाहती है । इतना ही नहीं तो मंडी से जाते समय कुमार से कहती है कि "अगर सचमुच मैं कभी उबर सकी अपने-आपसे, जिसकी कि मुझे आशा नहीं हैं, तो सबसे पहले मैं तुम्हारे पास आऊँगी । तुम तब चाहे ..... ।"[14]

श्यामा मंडी जाने से पहले जब कुमार से मिलती है तब उसे मंडी जाने की बात बताने के लिए उसके पास जाती है । उसी समय श्यामा को देख कुमार की साँस तेज हो रही थी और चेहरा एक स्त्री को पा लेने के पुरूष भाव से जड़ हो रहा था । उसी समय कुमार के चुम्बनों की बौछार उसके होठों पर पड़ती है । जब वह जाना चाहती है तब कहती है कि इस समय वह जा रही है, लेकिन वह कभी न सोचे कि कुमार के साथ जितना भी संबंध था उसे तोड़ कर जा रहीं है । वह जाते-जाते यह भी कहती है कि "हो सकता है कि कभी तुम्हें आने के लिए लिखू पर आओ तो कोई ऐंसी-वैसी बात सोचकर मत आना ।"[15]

इससे स्पष्ट है कि श्यामा एक ऐसी नारी है जो अपने अकेलेपन को भरने के लिए प्रो. कुमार से काम संबंध स्थापित करना चाहती है । कुमार भी अपने अकेलेपन को भरने के लिए श्यामा से संबंध प्रस्थापित करता है । परंतु श्यामा तथा कुमार इस काम संबंध को नाम नहीं देना चाहते । वे दोनों इस काम संबंध को अनाम

संबंध के रूप में रखना चाहते हैं । परंतु उन दोनों का काम संबंध अनेक उतार-चढावों से गुजरने के कारण उन्हें दु:खों का सामना करना पड़ता है । स्पष्ट है कि दोनों का काम - जीवन सुखद तथा सफल नहीं बन पाया ।

5.3 न आनेवाला कल -

5.3.1 मनोज और काशनी का काम संबंध -

राकेश जी के दूसरे उपन्यास 'न आने वाला कल' में भी काम संबंधों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है । इस उपन्यास में मनोज का काशनी तथा बॉनी और चेरी का मिसेस दारूवाला के साथ काम संबंध राकेश जी ने सूक्ष्मता से चित्रित किया है ।

मनोज सक्सेना इस उपन्यास का नायक है जो फादर बर्टन स्कूल में हिंदी का अध्यापक है । मनोज एक ऐसा आदमी जिसने अपने जीवन के पैंतीस साल बिना शादी के गुजारे हैं । अपने जीवन के पैंतीस साल गुजरने के बाद वह तेईस वर्षीय विधवा शोभा से शादी कर अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने की कोशिश करता है । मनोज अपना यौवन काल बीत चुकने के बाद शोभा से शादी करता है और शोभा ने अपना यौवन अपने पहले पतिपर अर्पित कर दिया था । फलत: विवाह हो जाने के बाद भी दोनों काम - संबंधों में असंतुष्ट थे । साथ ही साथ उन दोनों पति-पत्नीं में तनाव भी बढता जा रहा था । इसका एक कारण था शोभा का पहला पति जो उपस्थित न होकर भी दोनों पति-पत्नी के बीच स्थित रहता था ।

मनोज की पत्नी शोभा का पहला पति मर चुका था । तब विधवा शोभा ने मनोज के साथ दूसरा विवाह किया था । शोभा और मनोज के विचार तथा स्वभावोंमें भिन्नता थी । शोभा एक स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी होने के कारण अपने बनाए मार्ग पर चलना पसंद करती है । अपने पति दूवारा दिए गए सुझाव उसे अच्छे नहीं लगते । दोनों पति-पत्नी अपने अहं के कारण अपने-अपने रास्ते पर चलते हैं । इसी के साथ-साथ दोनों शारीरिक संबंधों में भी असंतुष्ट थे । मनोज ने पैंतीस साल तक कुंवारा जीवन जीया था इसी कारण शादी के बाद पत्नी शोभा से प्यार की चाह रखना स्वाभाविक था । परंतु अपना यौवन काल तथा शुरू की जिंदगी अपने पहले पति के साथ

बिताने के कारण शोभा मनोज की काम वासना तथा इच्छाओं की पूर्ति करने में असमर्थ है । इसी कारण दोनों में तनाव बढता जाता है ।

मनोज अपने वैवाहिक जीवन में काम के बारें में अतृप्त है । इसी कारण वह अपनी काम वासना की पूर्ति करने के लिए तड़फता है । कोई भी विवाहित आदमी से अपनी काम वासना पूरी न होने पर अपने काम को तृप्त करने के लिए बाहर किसी अन्य स्त्री की ओर आकर्षित हो जाता है । मनोज भी ऐसा ही आदमी हैं जो अपनी अतृप्त कामवासना की पूर्ति के लिए किसी अन्य स्त्री का सहारा लेना चाहता है । पहले पहल वह अपने ही स्कूल की अध्यापिका बॉनी हाल की ओर आकर्षित हो जाता है । बॉनी मुक्त यौन संबंधों में विश्वास करती है । इसी कारण वह भी मनोज के साथ काम-संबंध स्थापित करना चाहती हैं । मनोज के अन्दर अतृप्त कामनाओं की भूख है । वह उसकी पूर्ति करना चाहता है । इसलिए वह बॉनी से कहता है ''बात तो कभी भी की जा सकती है, कहीं भी'' परंतु बॉनी इसका विरोध करते हुए तुरन्त कहती है ''बात तो शायद ही कभी की जा सकती हैं । हाँ, यह खेल कभी भी खेला जा सकता है । कहीं भी । किसी के साथ भी ।''[16] इससे ज्ञात होता है कि मनोज छिपकर उससे शारीरिक संबंध स्थापित करना चाहता है, परंतु बॉनी किसी की भी परवाह नहीं करती । उर्मिला मिश्र के अनुसार ''वह हर आदमी की संगत अपने चुनाव के स्तर पर करती है । आदमी के चुनाव के स्तर पर नहीं । वह किसी के साथ 'डेट' अपने लिए करती है । आदमी के लिए नही। आदमी के पहले का चेहरा हटा कर नया चेहरा लगाने की प्रक्रिया से अवगत रहती है ।''[17] वह आवेश के क्षणों में अलिंगन बद्ध भी होती हैं । इतना ही नहीं तो वह मनोज के साथ रातें बिताने के लिए भी तैयार हो जाती है । परंतु मनोज उसे स्वीकृति नहीं देता । इसी कारण दोनों का यह काम संबंध ज्यादा दिन नहीं चल सका ।

जीवन में मनोज की वासना-पूर्ती न हो सकी । उसकी पत्नी भी उसकी काम वासना की पूर्ति न कर सकी । तब वह अपने ही स्कूल के चपरासी फकिरा की पत्नी काशनी की ओर आकर्षित हो जाता है । काशनी की सुंदरता के बारें में मनोज कहता है ''वह सुड़ौल शरीर की काफी सुंदर स्त्री थी । दो साल पहले उसे देखते थे, तो बिलकुल लड़की सी लगा करती थी । तब उसके चेहेरे पर वे हल्की झाइयाँ नहीं थी जो इधर कुछ महीनों से झलकने लगी थीं ।''[18] जब मनोज अपना इस्तीफा देकर अपने कमरे की ओर जा रहा था तब उसकी भेंट काशनी से हो जाती है । दोनों की मुलाकात होती है । इसके बारे में मनोज कहता है ''मुझे देखकर वह मुस्करा दी थी । जैसे

साथ-साथ खड़े होने के बाद से एक अनकहा संबंध हमारे बीच स्थापित हो गया हों ।"[19] इसी समय अपने घर का फालतू सामान ले जाने के लिए वह काशनी के पति को घर बुलाता है । परंतु सामान लेने के लिए फकिरा के बदले काशनी ही चली जाती है । अपना सारा काम निपट कर वह चले जाने की अनुमति माँगती है । मनोज को उसके सुंदर सुड़ौल शरीर का आकर्षण मोहित कर देता है । तब वह उसे अपनी बाँहों में लेकर उसके होठों, गालों और गरदन को चुमता है । काशनी उसे किसी भी तरह का विरोध नहीं करती । परंतु मनोज जब और आगे बढने की कोशिश करता है तब वह उसका विरोध करते हुए कहती है "कुछ दिन पहले छोटा आपरेशन हुआ था मेरा । अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई ।"[20] वह अपने आपरेशन होने की झूठ बात बताकर मनोज को रोकती है । इससे ज्ञात होता है कि वह अपने आपको बचाए रखने के लिए ही झूठा बहाना बनाती है । इसी कारण मनोज जो अतृप्त था, अतृप्त ही रह जाता है ।

मनोज और काशनी का काम संबंध क्षणिक है । सिर्फ कुछ क्षणों में वह स्थापित हो जाता है और कुछ क्षणों में ही समाप्त भी हो जाता है । इससे स्पष्ट है कि मनोज और काशनी दोनों कों भी सफलता तथा संतोष नहीं मिलता । मनोज को तो दुख ही दुख मिलता है ।

5.3.2 चेरी और मिसेस दारूवाला का काम संबंध -

'न आनेवाला कल' उपन्यास में मनोज और काशनी के काम संबंधों के अलावा एक और काम संबंध सामने आता हैं, वह है चेरी और मिसेस दारूवाला का । चेरी और मिसेस दारूवाला दोनों एक ही स्कूल में काम करतें हैं ।

चेरी एक शादीशुदा आदमी है । फिर भी वह मिसेस दारूवाला से काम संबंध स्थापित करता हैं । वह उसे अपने साथ रखना चाहता है परंतु उन दोनों के बीच उसकी पत्नी की रूकावट आती है । इसलिए पत्नी लारा की रूकावट दूर करने के लिए वह उसे मायके भेजना चाहता है । परंतु चेरी की यह आदत लारा को पसंद नहीं है । साथ ही उसे यह डर लगता है कि चेरी मेरे अलावा मिसेस दारूवाला का न हो जाए । इस भय के कारण वह मायके नहीं जाती । चेरी के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है । लारा का यह इर्द-गिर्द घूमना चेरी को पसंद नहीं है । वह

लारा की नजरे चुराकर मिसेस दारूवाला से मिलता रहता है । यही नहीं वह उसके साथ पार्टियों में भी हिस्सा लेता है ।

मिसेस दारूवाला का संबंध विच्छेद हो गया है । उसकी ओर देखने के बाद पता लगता था कि वह सैंतीस साल की होते हुए भी काफी आकर्षक है । उसके गालों के ऊपरी हिस्से काफी चिकने थे । जैसे "पारसी पीलेपन की जगह देसी गोरापन लिए ।"[21] फिर भी अगर वह अपना चेहरा नीचे से ढककर सिर्फ आँखे और उसके ऊपर का हिस्सा दिखाती तो लगता था कि वह सैंतीस से कम उम्र की है । परंतु उसकी बातों से पता चलता था वह सैंतीस साल से कम उम्र की नहीं हैं । इससे ज्ञात होता है कि मिसेस दारूवाला का व्यक्तित्व काफी आकर्षक था । मिसेस दारूवाला का संबंध विच्छेद हुआ था अत: चेरी के साथ काम संबंध स्थापित कर वह अपनी काम-वासना तृप्त करती है ।

इस तरह इन दोनों के काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात हो जाता है कि चेरी और मिसेस दारूवाला का यह काम संबंध सिर्फ अपनी-अपनी काम वासनाओं की पूर्ति के लिए ही बना हुआ नजर आता हैं । परंतु वह काम संबंध जादातर स्थायी नहीं दिखाई देता ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित काम-संबंध ज्यादातर अनैतिक, विवाहबाह्य और अस्थायी परिलक्षित होता है । इस तरह के काम संबंधों में देह की प्यास, शरीर की भूख तथा वासना की आग बुझाने की प्रवृत्ति ही आधारभूत है । उत्कट प्रेम, संतान या पुत्र-प्राप्ति का प्रयोजन राकेश के उपन्यासों में प्राप्त काम - संबंध में कदापि आधारभूत नजर नहीं आता ।

5.4 काँपता हुआ दरिया -

5.4.1 एलिस और खालका का काम संबंध -

एलिस शाह साहब के यहाँ आया थी । वहाँ पर खालका भी नौकरी करता था । दोनों शाह साहब के नौकर होने के कारण साथ-साथ के कमरे में रहते थे । दोनों एक-दूसरे के साथ खुले आम बातें करते थे लेकिन उन दोनों में काम-संबंध स्थापित हो चुका था यह मालूम ही नहीं होता । परंतु खालका के एक वाक्य से ही

मालूम हो जाता है कि उन दोनों का काम-संबंध स्थापित था - "इतने दिन एलिस से संबंध रखने पर ही उसका कुछ परिणाम क्यों नहीं निकला ?" [22] वह आगे उसे यह भी पूछता है कि "हमारे बीच में जो कुछ होता है, उससे किसी दिन - किसी दिन कोई मुसीबत भी तो खड़ी हो सकती है ।" [23]

दोनों में काम संबंध तो था लेकिन खालका इस काम संबंध से हर वक्त चिंतित था । परंतु एलिस तो खुलेआम तथा बिना कुछ चिंता के अपना जीवन व्यतीत करती थी ।

संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि इन दोनों का काम संबंध अवैध है ।

निष्कर्ष -

मानव जीवन में धन-दौलत, गाडी और बंगला आदि के समान एक और आवश्यकता होती है । शारीरिक भूख की संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरूष में शारीरिक भूख तो होती ही है । इस शारीरिक भूख को मिटाने के लिए शादी-ब्याह जैसे सामाजिक बंधनों को स्वीकारना पड़ता है । शादी ब्याह जैसे सामाजिक बंधनों को स्वीकारने के बाद जो संबंध स्थापित होते हैं उनकी चर्चा ज्यादा नहीं होती । परंतु संसार के कुछ स्त्री-पुरूष इस सामाजिक तथा धार्मिक बंधनोंका उल्लंघन कर अपनी काम-वासना तृप्त करते हैं । तब उनके संबंधों तथा रिश्तों की चर्चा अधिक हो जाती है । इसके पीछे भी कुछ कमजोरियाँ होती है जैसे धन-दौलत, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान तथा अतृप्त वासना आदि ।

'अंधेरे बंद कमरे' में राकेश ने जो चित्रण किया है वह बहुत सूक्ष्मता से किया हैं । इस उपन्यास का नैरेटर मधुसूदन अविवाहित तथा यौवन अवस्था में प्रवेश करने वाला पात्र होने के कारण वह अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए ही सुषमा श्रीवास्तव के प्रति आकर्षित हो चुका है । परंतु सुषमा खुलेआम जिंदगी जीने वाली नारी होने के कारण उससे संसार देखा है । वह अब अपनी इस खुलेआम जिंदगी से तंग आ चुकी है । वह अब अपना एक घर बसाना चाहती है । इससे ज्ञात होता है कि सुषमा का मधुसूदन के प्रति जो आकर्षण है वह काम के संदर्भ में नहीं है । दोनों की आकांक्षाओं में भिन्नता होने के कारण उनका काम जीवन सिर्फ एक दूसरे के साथ बातचीत करने तक ही सिमित रहा है ।

राकेश जी के दूसरे उपन्यास 'अन्तराल' में भी काम-संबंधों का चित्रण है । इस उपन्यास की नायिका श्यामा एक विधवा नारी है । साथ ही यौवन से परिपूर्ण नारी है जिसने अपने पति के साथ सिर्फ डेढ साल की वैवाहिक जिंदगी गुजारी है । परंतु इस वैवाहिक जीवन में जितनी काम वासना की तृप्ति हुई है उसमें वह संतुष्ट नही है । वह अकेलेपन की शिकार होने के कारण अपने आपको अकेलेपन से मुक्त करना चाहती है । कुमार भी विवाहित होते हुए भी अपनी पत्नी द्वारा अपनी कामवासना की तृप्ति न कर सका । इसी कारण वह अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए तड़फ रहा था । वह भी अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ही किसी न किसी स्त्री का सहारा लेना चाहता था । श्यामा और कुमार दोनों भी एक-दूसरे पर आकर्षित होकर अपने अकेलेपन को भरना चाहते हैं । दोनों अपनी अतृप्त काम वासना तृप्त करने के लिए ही 'काम-संबंध' स्थापित करते है । परंतु उसे नाम नहीं देते । इससे ज्ञात होता है कि दोनों अपने अकेलेपन से अपने आपको मुक्त करने के लिए ही एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं ।

राकेश जी का तीसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' में चित्रित काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि इस उपन्यासों में जो काम संबंध स्थापित हुआ है, वह अपने खालीपन तथा तनावपूर्ण वैवाहिक जीवन से छुटकारा पाने के लिए ही स्थापित है । उपन्यास के नायक मनोज सक्सेना के अन्दर अपनी अतृप्त कामनाओं के पूर्ति की भूख है । वह अपनी पत्नी शोभा से शादी कर अपने खालीपन को भरने की कोशिश करता है । परंतु शोभा से जुड़े पुरूष से उसे द्वेष है । इसी कारण वह शोभा से जुड़ न सका । शोभा के बाद उसकी पूर्ति बॉनी के द्वारा करना चाहता है । परंतु बॉनी अस्तित्व के स्तर पर उससे टकराती है । उसे असहाय बनाती है । उसी समय वह अपने सभी बंधनों से मुक्त होकर काशनी से अपना खालीपन भरने का असफल प्रयत्न करता है । परंतु काशनी उसे आगे बढने नहीं देती । इसी प्रकार प्यासा मनोज अपनी प्यास बुझाने का प्रयास तो करता है परंतु प्यासा ही रहता है ।

राकेश का चौथा उपन्यास काँपता हुआ दरिया में चित्रित काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि खालका का खालीपन तथा अकेलापन और दूसरी ओर एलिसकी अतृप्त इच्छा तथा आधुनिकता के जोश में रूपये कमाने की इच्छा के कारण ही स्थापित हुआ है ।

इससे ज्ञात होता है कि राकेश जी के उपन्यासोंमें चित्रित काम संबंध अपनी अतृप्त काम वासना तृप्त करने की आकांक्षा के कारण ही स्थापित हो चुके हैं ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विवेच्च उपन्यासों में अपनी अतृप्त काम वासना तथा अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही पुरूष या स्त्री किसी न किसी के साथ काम संबंध स्थापित करते हैं । दांपत्य जीवन में स्थित तनाव, अनबन, अप्रेम समर्पण के कारण और स्वच्छंदता की प्रवृत्ति आदि के कारण विवेच्च उपन्यासों में जो काम-संबंध चित्रित मिलता है उसमें ज्यादातर अवैध काम संबंध ही दृष्टिगोचर होता है । विवेच्च उपन्यासों के अधिकतर पात्रों के जीवन में विवाह - विच्छेद परिलक्षित होता है । अधिकतर पात्रों का वैवाहिक जीवन नीरस, दु:खमय और अतृप्त दिखाई देता है । इसका मूल कारण हम लेखक के व्यक्तिगत जीवन में पा सकते हैं । स्वयं राकेश ने अपने जीवन में तीन विवाह किये थे । उन अनुभवों ने उन्हें लेखन के लिए 'प्लॉट' ही नहीं तो अच्छी खासी जमीन भी दे दी । उनके द्वारा चित्रित पति-पत्नी का काम-संबंध सुखद कम और दुखपूर्ण ही ज्यादा मिलता है । अधिकतर स्त्री-पुरूषों का काम संबंध अतृप्त, अवैध, अनैतिक और असामाजिक ही परिलक्षित होता है जिसे राकेश ने अत्यंत बारीकी से चित्रित किया है ।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

1. डॉ. गिरीधरप्रसाद शर्मा - हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृष्ठ - 204
2. डॉ. घनानंद शर्मा 'जदली' - मोहन राकेश का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ -95-96
3. इंद्रनाथ मदान - आज का हिंदी उपन्यास, पृष्ठ - 92
4. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 271
5. वही, पृष्ठ - 271
6. वही, पृष्ठ - 271
7. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ - 52
8. वही, पृष्ठ - 55
9. वही, पृष्ठ - 51
10. वही, पृष्ठ - 61
11. वही, पृष्ठ - 75
12. वही, पृष्ठ - 213
13. वही, पृष्ठ - 213
14. वही, पृष्ठ -84
15. वही, पृष्ठ - 215

16. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ - 125

17. डॉ. उर्मिला मिश्र - आधुनिकता और मोहन राकेश, पृष्ठ - 101

18. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ - 163

19. वही, पृष्ठ - 163

20. वही, पृष्ठ - 171

21. वही, पृष्ठ - 115

22. सं. जयदेव तनेजा - 'एकत्र', पृष्ठ - 313

23. वही, पृष्ठ - 313